ISSN: 2349-7637 (Online)
Volume-1, Issue-3, October 2014
RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal
Research Paper

भारतीय एवं पश्चिमी चिन्तन परम्परा में मानववाद

कुमारी सुधा देवी

शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

भारत में 'दर्शन' उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का ज्ञान हो सके। 'तत्व दर्शन' या 'दर्शन' का अर्थ है तत्व का ज्ञान। मानव के दुखों की निवृति के लिए या तत्व ज्ञान कराने के लिए ही भारत में दर्शन का जन्म हुआ है। भारतीय दर्शन विशाल और गहरा है। इस विशाल और गहरा दर्शन में मानवतावाद प्रमुख तत्व माना गया है, । जिस से मानव जीवन की सार्थकता को समझने एवं समझाने का प्रयास संभव हो सका । मानवतावाद मानव मूल्यों और चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला अध्ययन, दर्शन या अभ्यास का एक दृष्टिकोण है। मानव मूल्यों की परवाह करना भारतीय दर्शन का केंद्रीय विशेषता रहा है। मानवतावादी दर्शन के विकास में पाश्चात्य एवं भारतीय अनेक विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें सुकरात, डेमोक्रीट्स, एपीक्यूरस, फ्रांसीसी दार्शनिक ला मात्री, वाइन द हेल्वाक, जर्मन दार्शनिक फायरबास, कार्लमार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्सय, इंग्लैण्ड के बर्टेण्ड रसेल तथा अल्बर्ट आइंसटीन, सर आर्थरकीथ, ए॰न॰ ह्वाइटहेड, सर जूलियन हक्सले, भारतीय विद्वान मानवेन्द्रनाथ राय आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

मानववाद मानव केन्द्रित दर्शन है, वैसा दर्शन जिसमें वह केन्द्र में न होकर परिधि में हो। प्राचीन भारतीय चिन्तकों ने भी मनुष्य को सर्वोपरि माना था। महाभारत के शांति पर्व में यह कहा गया है कि ब्रहम का रहस्य यही है कि सृष्टि में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव की श्रेष्ठता का अनुभव करते हुए ही पुरूष सुक्त में ईश्वर के लिए पुरूष संज्ञा का प्रयोग किया गया है। प्रकृति के सत्यों का जैसे तैसे दिव्य स्वरूप में विकास होता गया उसके विकास की चरमावस्था को अभिव्यक्त करने के लिए वेदों को पुरूष शब्द से अधिक उचित कोई शब्द नहीं मिला। पास्कल नाम विद्वान् ने भी मनुष्य को इस संसार का सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक जीवन कहा है। ग्रीक दार्शनिक सौकोवलीज ने भी पौरस्त्य चिन्तकों की तरह मनुष्य को सृष्टि में अद्भूत प्राणी के रूप में स्वीकार किया है । मनुष्य ज्ञान का अधिकारी ही नहीं बल्कि ज्ञान प्राप्ति कर उसको अभिव्यक्त करने की क्षमता रखनेवाला भी तथा कर्ता है। इसलिए ऐतरेय उपनिषद् का यह वचन है कि "मनुष्य विश्वशक्ति की सुकृति है। मनुष्य का अर्थ सुकृत या पुण्य हैं।' शतपथ ब्राहमण में ब्रहम का रहस्य मानव में ही निहित माना गया है क्योंकि नर ही नारायण के समीप है। बाईबिल में भी मनुष्य की श्रेष्ठता कई स्थानों पर स्वीकार की गई है। कुरआन मजीद में कहा गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ आकार का बनाया है।"

यथार्थ के धरातल पर मानववाद एक ऐसा दर्शन है जिसमें मानव की श्रेष्ठता सब तरह से स्वीकार की गयी है। आरची जे0 बाम ने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने साध्य है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के अंतिम उद्देश्य की सिद्धि प्रथमतः विश्व के अंदर ही होती है उसके बाहर नहीं, द्वितीयतः मनुष्य जाति के अंदर होती है न कि उसके बाहर और अंत में हर मनुष्य के अंदर होती है न कि उसके बाहर। मानव स्वयं अपना ज्ञाता व्याख्याता और निर्णायक हैं, वही अपने गुण-दोष, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित का निर्णय करता है तथा अपने ज्ञान का साधन भी स्वयं है। सोफिस्ट दार्शनिकों ने भी मानव को सृष्टि का केन्द्र एवं मापदण्ड माना है। उसके अनुसार मानव स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करता है। प्रसिद्ध युनानी चिन्तक सुकरात ने भी मानव की महनीयता स्वीकार की है और यह कहा है कि मनुष्य में सभी सार्वभौमिक सिद्धान्त, विचार-प्रत्यय और धारणायें हैं जो सत्य के निकट है और वही इस सृष्टि के रहस्य को समझाने में समर्थ है।

भारतवर्ष के बहुत सारे चिन्तकों ने भी मनुष्य की श्रेष्ठता का उद्घोष किया है। चण्डीदास ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "सवार चेये मानुष ऊपर ताहार ऊपर नाइ। अर्थात् मानव सृष्टि में सर्वोत्तम जीव है उसमें ऊँचा कोई नहीं। श्री अरविन्द एवं विवेकानन्द ने भी मनुष्य की श्रेष्ठता किसी न किसी रूप में स्वीकार की है। मानववादी परंपरा अत्यन्त प्राचीन है। इस परंपरा में मानव के विषय में, मानव कल्याण के विषय में, मानव की असीम शक्ति के विषय में और मानव के कर्म करने की स्वतंत्रता के विषय में मानव, की असीम शक्ति के विषय में और मानव के कर्म करने की स्वतंत्रता के विषय में तथा मानव के उत्तरदायित्व के विषय में बराबर विचार किया गया है वस्तुतः किसी भी दर्शन की उपयोगिता उसके मानव केन्द्रित होने में ही है।

निश्चयतः मानववाद के अर्थ के दार्शनिक निरूपण के क्रम में इस तथ्य का उदबोध सर्वथा अपेक्षित है कि मानववाद को किसी वैचारिक सम्प्रदाय की कोटि में प्रतिबद्ध नहीं किया जा सकता । यह सर्वथा उल्लेखनीय है कि अपने स्वरूप के परिवेश में मानववाद कोई वैचारिक सम्प्रदाय नहीं है, यह पूर्णतया निश्चित एवं सर्वसम्मत सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने की चेष्टा भी नही है, बल्कि यथार्थ के धरातल पर इसका आविर्भाव तो इस प्रकार के प्रयत्नों के विरुद्ध उनके प्रतिवाद में ही होता है। यह दर्शन के एक नये सम्प्रदाय को स्थापित करने की चेष्टा

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

में जन्म नहीं लेता। वस्तुतः मानववाद कोई वाद नहीं , एक दृष्टि है, विशेष प्रकार की मानवीय स्थितियों को देखने का एक सर्वथा विशिष्ट ढंग है । इसकी इस मूल दृष्टि की मौलिकता तथा विशिष्ठता में ही इसका प्रभाव है। यह कुछ इस ढंग की दृष्टि है कि उस दृष्टि के प्रति यदि संवेदनशीलता जागरूक हो, तो मानववाद विचार को उद्वेलित तो करेगा ही, मन को भी छु लेगा इसकी बातों मे एक विचित्र प्रकार की आत्मीयता का बोध होता है। इसी कारण कहा जा रहा है कि यह अपने ढंग की दृष्टि है।

सर्वथा ध्यातव्य है कि मानववाद की मूल और केन्द्रभूत उक्ति है कि विचार को मनुष्य पर केन्द्रित होनी चाहिए। इसलिए मानववादी दृष्टि मानव केन्द्रित है। अपने आप में यह एक दृष्टि से तटस्थता की दृष्टि है पाश्चात्य एवं पूर्वी अर्थात् भारतीय धरातल परिवेश में इसकी स्थिति होटल के गलियारें जैसा है, जिसमें अनेकों दरवाजें अनेक कमरों के लिए खुलते है। यह गलियारा मानव-उत्थान और मानव-विकास का गलियारा है। पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों ही परिवेश में प्रत्येक मानववादी विचार को इस गलियारे से होकर जाना पड़ता है, भले ही वह अलग-अलग कमरों में जाता रहे और अन्ततोगत्वा प्रकृतिवादी हो जाय अथवा आध्यात्मवादी अथवा इनसे भिन्न कुछ और।

पश्चिम में मानववाद का उद्भव ईसा पूर्व 5वीं सदी में सोफिस्ट विचारक प्रोटागोरस के साथ उसकी इस उद्घोषणा में हुआ है कि "मनुष्य ही हर वस्तु का मानदण्ड है।" निश्चयत प्रोटोगोरस की इस उद्घोषणा का उद्देश्य मनुष्य को सबसे अधिक चालाक प्राणी के रूप में स्थापित करना था, क्योंकि यही सृष्टि का सबसे विचारवान प्राणी के रूप में अवस्थित है, तथा इस आधार पर प्रोटोगोरस का लक्ष्य दार्शनिक चिन्तन को अनिश्चित सत्य की परिकल्पनात्मक जगत् से निकाल कर मानव और उसकी समस्याओं पर सकेन्द्रित करना था प्रोटोगोरस एवं उनके समान विचारधारकों को मानव की अगाध क्षमता पर अत्यधिक विश्वास था एवं अपने इसी विश्वास की संपुष्टि में इन क्लासिकी विचारकों के विचारों में सबसे पहली बार पैगान एवं लौकिकवादी प्रवृति को बेगवती बनाकर सृष्टि के स्तर पर मानव की उक्त स्थिति एवं गरिमा को प्रतिष्ठित उद्घोषणा में इस युग में विकसित मानववादी चेतना के अधीन मानव अवधारणा की सुन्दर अभिव्यक्ति प्राप्त होती है:

"करिश्ममे बहुत है दुनिया के
कोई करिश्मा बड़ा नही आदमी से।।"

विवेकशील और विचारवान मनुष्य ही स्वयं सक्षम है कि वह स्वयं अपने जीवन मूल्यों का निर्धारण कर सके। अतः विचार का केन्द्र मनुष्य ही होना चाहिए। न कि कुछ अन्य ।

निश्चयतः पाश्चात्य दर्शन मानववाद की गरिमा को सुदृढ़ धरातल पर अवस्थित करने की तीक्षण बौद्धिक चेतना से अक्षुण्ण नहीं रहा है। विज्ञान भी, "प्रकृतिक विज्ञान" के विशेषण आवरण से आवरित हो दार्शनिक चिन्तन का अभिधेय रहा है, तथा तब से लेकर आज तक उसके परिप्रेक्ष्य में मानववादी चेतना की धारा का प्रवाह आज तक निरंतर जारी है। यह एक सर्वग्राही अभिधेय तथ्य है कि आज बीसवी शती में मनुष्य ने विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। समय और दूरी पर नियंत्रण कर लिया है,इसका फल यह हुआ है कि एक जगह से दूसरी जगह लोग त्वरित गति से आने-जाने लगे हैं और विचारों का आदान-प्रदान होने लगा हैं। पहले जब एक जगह से दूसरी जगह जाना कठिन था, विचारों की यात्रा भी नहीं हो पाती थी और लोग एक देश में घटित होने वाली बातों से अनभिज्ञ रह जाते थे। इस शताब्दी में विचारों के त्वरित आदान प्रदान ने एक राष्ट्र के लोगों को भी दूसरे राष्ट्रों के लोगो के बारे में सोचने को बाध्य किया है विज्ञान की प्रगति के कारण सारा विश्व एक महासागार की तरह हो गया है। उसमें कहीं भी एक लहर उठती है तो उसका प्रभाव सम्पूर्ण मानव पर प्रडता है। लोकतांत्रिक चुनाव, अमेरिका में अन्तर्निहित वियतनाम युद्ध सम्बंधी परीक्षण एक देश में सीमित न रहकर विश्वव्यापी बन जाता है। उसी तरह कार्ल मार्क्स का विचार भी एक देश में सीमित न रहकर विश्वव्यापी हो गया है और कार्ल मार्क्स मनुष्य मात्र की आर्थिक स्वतंत्रता एवं समानता का उद्घोषक बन गया है। बहुत सारे परिवर्तन बीसवी शती में हुए है, बहुत सारे वैज्ञानिक आविष्कार हुये हैं बहुत सारे चिंतन हुये हैं उनका प्रभाव समूची मानव जाति पर पड़ा है। मानव उपेक्षित न रहकर मानवीय बना है और उन सारे दर्शनों का विकास हुआ है जिनमें मनुष्य की मर्यादा स्वीकारी गयी है और वैसे चिंतन की मात्रा बढ़ी है जिनमें मनुष्य के सुख-शांति की बात सोची गयी है। अर्थ-क्रियावाद और अस्तित्ववाद भी मनुष्य के सुख और शांति की बात सोचता है। जहाँ अस्तित्वाद भी मनुष्य के अस्तित्व की रक्षा के लिए चिंतित है वहाँ अर्थ क्रियावाद मनुष्य के लिए क्या उपयोगी तथा उसके ऐहिक और आध्यात्मिक सुख-शांति के लिए किन तत्वों की आवश्यकता है इस पर विचार करता है। अर्थ -क्रियावाद ऐसे तत्व-चिंतन की उपयोगिता में आस्था नहीं रखता जो मनुष्य की समस्याओं का समाधान सीधे नहीं कर सके। अस्तित्ववाद मनुष्य के अस्तित्व को खतरे में देखकर तथा उसके द्वारा अर्जित मूल्यों के विनाश की आशंका को देखकर उसके गौरव को प्रतिपादित करता है तथा उसको अपने सभी कर्मो के लिए उत्तरदायी बनाकर उस पर एक बहुत बड़ा भार सौंपता है ताकि वह विवेकशील बने और अपनी बुद्धि द्वारा अर्जित शक्ति का सदुपयोग करे। कोई भी दर्शन शून्य में उत्पन्न नहीं होता, उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठ-भूमि रहती है।

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

डिक्सनरी ऑफ फिलोसपी में मानववाद की परिभाषा इन शब्दों में दी गई है, "मानववाद विचारों की एक पद्धति है जो मनुष्य की मर्यादा को श्रद्धा की दृष्टि से देखती है और उसका हित चिंतन मानववाद का लक्ष्य है, वह मानव का सभी तरह से विकास चाहता है और वैसी अनुकूल परिस्थितियों का सृजन करना चाहता है जिससे मानव का सामाजिक जीवन सुखमय एवं शांतिमय हो सके। मानववादी विचारों की उत्पत्ति शोषण और पाप के विरुद्ध लोक प्रिय संघर्षों में स्वतः हुई। चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी तक पुनर्जागरण काल में यह एक विशिष्ट महत्वूपर्ण सैद्धान्तिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। इस समय इसका प्रधान उद्देश्य था मध्ययुगीन धार्मिक प्रवृत्ति और फ्यूडलिज्म के प्रति विद्रोह दर्शाना । मानववाद का गहरा सम्बन्ध प्रगतिशील भौतिकवाद से है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता का उद्घोष करता है। धार्मिकतावाद का विरोध करता है और मनुष्य को सुख प्राप्त करने एवं सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति के अधिकार को स्थापित करता है।"

मानववाद का क्रमिक विकास होता रहा है पुनर्जागरण काल के मानववादी जैसे पटाके, डान्से, बोकैच्यों, लिपों नादो, दावीची, ब्रोनो, रॉवेल, कॉपरनिक्स, मॉन्टेन, शेक्सपियर, फ्रांसिस बेकन ने लौकिक विचारों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। लेकिन उनलोगों ने मजदूरों तथा दलितों के क्रांतिकारी आंदोलनों का समर्थन नहीं किया। मानववादी विचारधारा में एक और धारा आकर जुड़ी और वह धारा थी मजदूरों और दलितों के प्रति सहानुभूति की। अठारहवीं शताब्दी में बुर्जुआ मानववाद शीर्ष पर था। उस समय स्वतंत्रता समानता और भ्रातृत्व नारे लगाये गये। फ्रांसीसी क्रांति का यह नारा मनुष्य के उस अधिकार का उद्घोष करता है कि वह अपने विकास के लिए स्वतंत्र है लेकिन वह मानववाद भी अपूर्ण था क्योंकि यह मजदूरों की अवस्थाओं पर उतना ध्यान नहीं देता था जितना देना चाहिए तथा उसकी सच्ची स्वतंत्रता की भी वह उपेक्षा करता था । इस प्रकार मानववादी आदर्श व्यक्तिवाद एवं निजी संपत्ति आदर्शों पर आधृत था। फल यह हुआ कि पूँजीवादी समाज में मानववाद का नारा नारा ही बनकर रह गया और उसके आदर्शों का बोध नहीं हुआ। इसकी पूर्ति समाजवादी मानववाद में हुई।

मार्क्स के विचारों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। साम्यवाद का जन्म हुआ। मनुष्य-मनुष्य में आर्थिक विषमताओं को दूर करने की बात सोंची गयी और मजदूरों एवं श्रमिकों की स्वतत्रंता का उद्घोष किया गया सामाजिक उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज उठायी गयी और सभी मनुष्यों के सम्यक विकास एवं हर व्यक्ति को सही अर्थ में स्वतंत्रता का आधार साम्यवाद को बताया गया। इस तरह शोषक और शोषित दलों में जो खाई थी उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया समाजवादी मानववाद के अभ्युदय से पूरी हुई। इस विचार का उद्घोष हुआ कि मानव ही मानव का मित्र साथी और बन्धु है। मानववादी दर्शन का सारा आदर्श साम्यवाद में दिखाई पड़ने लगा क्योंकि यह सभी प्रकार के असमानताओं को दूर करता है और न्याय पर आधारित समाज की स्थापना करता है। साम्यवाद का यह नारा रहा कि "प्रत्येक व्यक्ति अनी शक्ति के अनुसार काम करें और प्रत्येक को उसकी आवश्कतानुसार दीमजदूरी जाय।""

आज जिस मानववाद का स्वरूप हमारे सामने विकसित हुआ है, उस मानववाद में मनुष्य की गरिमा, उसकी मर्यादा, उसका महत्व, उसके सभी प्रकार के अभ्युदय, उसका उत्तरदायित्व, सभी मानवों की समानता उसकी स्वतंत्रता एवं विश्वबन्धुत्व आदि तत्व निहित है। साथ ही यह मनुष्य द्वारा कला, साहित्य संस्कृति आदि की उपलब्धियों तथा उसके संरक्षण और परिवर्द्धन को अपना उद्देश्य मानता है। मनुष्य का विकास चतुर्दिक हो, विशेषकर सांसारिक सुख शांति के क्षेत्र में यह इसका मूल मंत्र है। वैज्ञानिक उपलब्धि से उत्पन्न भय और संत्रास से मनुष्य मुक्त हो सके, यह भी इसका एक प्रमुख लक्ष्य है। आधुनिक मानववाद मनुष्य के आध्यात्मिक विकास पर उतना बल नहीं देता जितना भैतिक सुखोपलब्धि पर देता है। प्रसिद्ध अमेरिकन दार्शनिक कारलिसलेमाण्ट जो आधुनिक मानववाद के उद्गाता माने जा सकते हैं, मानववाद की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि "मानववाद का दर्शन एक ऐसी जीवन-पद्धति है जो मानव-जाति की सृजनात्मक शक्तियों को मुक्त करती हैं और उनका संसार के विभिन्न लोगों में एक पारस्परिक सौहार्द भाव को बनाये रखती है। उनके शब्दों में "आधुनिक मानववाद विश्वबन्धुत्व अन्न्तराष्ट्रीयता, मैत्री और सच्चे भ्रातृभाव का समर्थन है। उपयुक्त परिभाषाओं से मानववाद के राजनैतिक एवं सामाजिक पक्ष पर प्रकाश पड़ता है लेकिन कारलिस लेमाण्ट ने मानववाद के तात्विक पक्ष पर भी प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि मानववाद अतिभौतिकवादी आधार की अपेक्षा नहीं करता है। निश्चयतः इतिहास से अर्जित मानव मूल्यों की विशिष्ट अवधारणा एवं साथ ही विध्वसंक युगीन परिस्थितियों के आधार पर आज मानववाद एक विशिष्ट मोड़ को प्राप्त करने में सफल हुआ है, जिसे एक सशक्त जीवन-दर्शन स्वीकार कर विचार, क्रिया तथा जीवन की एक विशिष्ट दृष्टि के रूप में मान्यता प्रदान की जा रही है। आज यह एक ऐसे मानव-केन्द्रित दर्शन के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हुआ है जिसका एक विशिष्ट स्वरूप एवं अर्थ है, और वह अर्थ है - प्रकृतिवादी अथवा विज्ञानवादी मानववाद । आज के युग में, पश्चिम की धरती पर मुख्यतः मानववाद का बोध इसी अर्थ में हो रहा है।

तुलनात्मक अध्ययन से पता चालत है कि मानववादी की प्रभावी उपस्थिति पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों ही चिन्तन परम्पराओं की विलक्षणता है। किन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट है कि इन दो भिन्न परम्पराओं में इस उपस्थिति को सर्वथा दो भिन्न घरातल प्राप्त हुए हैं. फलस्वरूप मानववाद के संपोषण के बावजूद इस संपोषण में दो भिन्न मूल दृष्टिया सर्जित हुई हैं। ऊपर के विवेचन से स्पष्टतः प्रदर्शित है कि पश्चिमी चिन्तन परम्परा के अन्तर्गत विकास के अपने लम्बे इतिहास में सदैव ही, किसी न किसी रूप में मानववाद आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा नैतिक क्षेत्रों में सुधार लाने एवं साथ ही इन क्षेत्रों में जीवन

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

को उत्कृष्टतर बनाने का उपकरण स्वीकृत हुआ है। इस चिन्तन परम्परा ने सदैव ही मानववाद को किसी न किसी रूप में मूलतः भौतिकवाद से जोडने का प्रयास किया है। भारतीय चिन्तन परम्परा में मानववाद की स्वीकार दिशा भिन्न रही है। यह बात स्पष्ट है कि भारतीय चिन्तन - परम्परा मानववाद को आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित करने के प्रति सदैव की उत्सुक रही है भौतिक सुख सुविधाओं की सर्वथा अवहेलना न करने के बावजूद यहां प्रभाव मानववादी दृष्टि अपना अन्तिम लक्ष्य मानव के आध्यात्मिक विकास, दुर्गण एवं दुर्बुद्धि के विध्वस, सद्गुणों के विकास तथा मलयुक्त चिन्तन के परिष्करण पर भी सकेन्द्रित किए रखा है।

इन दो भिन्न घरातलों पर विकसित मानववाद आज दो सर्वथा भिन्न एवं साथ ही स्पष्ट रूप ग्रहण कर चुका है 1. प्रकृतिवादी अथवा वैज्ञानिक मानववाद 2. आध्यात्मिक मानववाद। पहला जहाँ मुख्य रूप से पश्चिमी चिन्तन परम्परा में संपोषित है, वहीं दूसरा भारतीय चिन्तन परम्परा में। तुलनात्मक अनुशीलन के क्रम में यहाँ दो बाते सामने आती है

1. प्रकृतिवादी मानववाद की दृष्टि जहाँ मानव को इहलोक की सुविधा एवं सुविधा प्रदान करती है वहीं आध्यात्मिक मानववाद दृष्टि मानव के मूलतः आध्यात्मिक विकास को अपने केन्द्र में रखे हुए है. परन्तु भौतिक पक्ष का विकास यहाँ सर्वथा उपेक्षणीय भी नहीं है। इस दृष्टि के अन्तर्गत भौतिक पक्ष यथार्थ में मानव-स्वभाव के एक पक्ष के रूप में स्वीकृत है, अतः मानव के विकास के लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है।

2 वैज्ञानिक मानववाद का अतिशय बल यथार्थवाद पर है जबकि आध्यात्मिक मानववाद मानव के गुणों की समृद्धि में तथा जीवन के एक ऊँचे आदर्श को स्थापित करने पर बल देता है।

लेकिन इन भिन्नताओं के बावजूद जो समान है, वह यह कि दोनों ही मानव को श्रेष्ठ एवं मानव मूल्यों को महत्वपूर्ण मानते हैं। सभी प्रकार की संकीर्णता, रूढ़िवादिता कट्टरता, हठवादिता एवं परतंत्रता से दोनों का घोर विरोध है तथा दोनों ही में उदात्त भावनाओं से प्रेरित स्वतंत्र मानव-जीवन की कामना पर बल है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख अनिवार्य है पश्चिमी एवं भारतीय चिन्तन परम्परा में मानववाद का अर्थ एवं स्वरूप निर्धारण यहाँ उस मूल धारा के आधार पर हुआ है, जिसका आरंम्भ से लेकर आज तक जोर है। लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि पश्चिम में आध्यात्मिकतावादी एवं भारत में प्रकृतिवादी अथवा भौतिकवादी मानववादी दृष्टि का सर्वथा अभाव है। सम्यक अन्वेषण से यह प्राप्त है कि पश्चिम में कुछ ऐसे भी मानववादी विचारकों का आविर्भाव हुआ है, जिनके द्वारा आध्यात्मिकता पर श्रेष्ठ बल प्रदान किया गया। प्रो0 शीलर इनमें सर्वोपरि हैं इसी कड़ी में डा० एलवर्ट श्वेट्जर भी दूसरे प्रमुख विचारक हैं, जो मानवादी दृष्टि के सर्जन में कोरि भौतिकता नहीं वरन् नैतिकता, अहिंसा एवं आत्मिक एकता की सर्वोपरि स्थिति की प्रतिष्ठा करते हैं । इनका स्पष्ट कथन मानव कल्याण के लिए ग्रहण की गयी विचार -पद्धति, जो समानता की अनुभूति से पोषित होकर मानव-मात्र के लिए गहरी सहानुभूति रखती है, वह मानववा है। पिका देला-मिशन दोला ने कहा है : ईश्वर ने मानव को समस्त प्रकार की स्वतन्त्रता प्रदान की है। आचार-विचार में संयमित रहकर आत्मज्ञान की उपलब्धि का उत्तरदायित्व उसे है। इस प्रकार मनुष्य को देवता तक विकास करने की स्वतत्रता तथा अपने को ऐसे नये रूप में सृजन की शक्ति ईश्वर ने प्रदान की है, जिससे वह अपने को चरम पूर्णता के स्तर तक ले जा सके।

भारत में आध्यात्मिकता पर अतिशय बल है, किन्तु यहाँ यह मानववादी चिन्तन भौतिकवादी अथवा प्रकृतिवादी दृष्टि से सर्वथा रिक्त नहीं है। प्रसिद्ध विचारक मानवेन्द्र नाथ राय इसी विचार के अग्रणी संपोषक के रूप में सामने आए है। मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल नहीं देकर इस विचारक ने मानव स्वरूप के आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष को ही अधिक महत्वपूर्ण उद्घोषित किया। समाजवादी चिन्तन में इस विचारक की गहरी आस्था थी, और इसी के वशीभूत हो इन्होंने मानववाद को सामाजिक ढाँचे की धूरी एवं जीवन की सृजनात्मक का आधार स्तम्भ स्वीकार किया। नव भारत के उन्नायक पं० जवाहर लाल नेहरू भी इसी मानववादी दृष्टि के सपोषक के रूप में सामने आए हैं

उपर्युक्त विवेचन से प्राप्त तथ्यों के आधार पर सारांशतः कहा जा सकता है-दर्शन के रूप में विकसित मानववाद यथार्थ में एक मानव केन्द्रित दृष्टि है, जिस दृष्टि में मानव हित को सर्वोपरि स्थान प्राप्त हुआ है। यहाँ यह भी स्पष्ट कि मानव-मूल्यों की व्याख्या एवं मानव-हितों की सुरक्षा में आज मानववाद में क्रमशः प्रकृतिवादी तथा आध्यात्मिक दो भिन्न धाराओं का प्रवल प्रवाह निहीत है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. मानववाद तथा मानवतावाद, डॉ ब्रजभूषण शर्मा पृ॰-95
2. Philosophical humanism in contemporary india, vishvnath Prasad verma,Motial Banarsidas 1971 P.-61

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

3. हिंदुस्तान की कहानी, जवाहर लाल नेहरू पृ॰-767
4. Humanistic tendencies intwenteeth century indian thought "Illa Tripathi, Bihar Granth kutir, patna, 1986. P.-1-10
5. प्रसाद चिन्तन, विमला गुप्ता, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ॰ 10-11
6. राधाकृष्णन, एस0; 'बढ़ती आजादी' (संक०) "रचनात्मक जीवन " हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 1989, पृष्ट 76.
7. राधाकृष्णकार, एस०, " धर्म और समाज," राज्यपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1975, पृ०-7
8. "Many are the X wonders of world, And none so wonderful as man."
9. (Sophacles) Quoted in ' Humanism as a philosphy' corliss Lamount P.80
10. Enclopaedia of Social Science Vol.7 P. 541.

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)